आशिक कीन लिकनि, सूरज जां हिन लोक में
सदा अलबेलनि जां, रता नेण रहनि,
काणि न कढनि कांहिंजी, सूरी पिणि सहनि,
अठई पहर विहनि, सामी सुपेरियुनि सां.

परमेश्वर से प्रेम करने वाले सच्चे प्रेमियों के लक्षण और विशेषताएँ बतलाते हुए सामी कहते हैं- 'प्रभु के प्रेमी (आशिक) इस संसार में कहीं भी कभी छिपते नहीं हैं, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार इस लोक में सूर्य छिप नहीं सकता। सच्चे ईश्वर भक्तों के नेत्र अलबेले मस्तानों की भाँति प्रेम के रंग में रंगे हुए रहते हैं, आरक्त रहते हैं। प्रभु-प्रेम का खुमार उनके आरक्त नेत्रों से ही झलकता रहता है। वे किसी के उपकार में नहीं रहते, किसी के मुहताज नहीं होते। वे तो सूली पर भी चढ़ने को तैयार रहते हैं। ऐसे ईश्वर प्रेमी अपने प्रियतम परमात्मा के साथ आठों प्रहर बैठे रहते हैं।

प्रेम (इश्क) के दो प्रकार माने गये हैं- लौकिक और अलौकिक प्रेम। इनमें अलोकिक प्रेम की महत्ता अधिक मानी गयी है। प्रेम की क्षुधा या भूख हृदय की होते हुए भी प्रेम की प्यास 'आत्मा' की होती है और होनी भी चाहिए। प्रेम यानी ईश्वर अथवा ईश्वर यानी प्रेम । ईश्वरीय प्रेम अध्यात्म का अनिवार्य तत्त्व है। सगणु परमात्मा और जीव के निष्काम प्रेम-संबंध को 'भक्ति' कहा जाता है। परमेश्वर से अनंत अनुराग भक्ति है। जिसके मन में परमेश्वर के प्रति प्रेम-भाव है, वह परमेश्वर के अति निकट है। क्यों कि परमेश्वर स्वयं ही प्रेम है। परमात्मा से अनन्य एवं निष्काम प्रेम करने वाले प्रेमी की ज्योति जगा कर प्रभु के दर्शन करते हैं। मीराबाई का श्रीकृष्ण से ऐसा ही सच्चा प्रेम था। ऐसे प्रेमी प्रभु के प्रेम रूपी सागर में डुबकी लगा कर अनंत सुख और आनंद के मोती प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे प्रेमी जन सूर्य की भाँति स्पष्ट दृष्टिगत होते हैं ; वे कही छिपकर नहीं रह सकते।

भक्ति करे पाताल में, प्रकट होवै आकास।
'रज्जब' तीनों लोक में, छिपे न हरि का दास।।

महाकवि सामी भी ऐसे ही प्रेमियों का/भक्तों का वर्णन करते हैं। ऐसे भक्तों को पहचानने के लक्षण बतलाते हुए सामी कहते हैं कि उनके आरक्त/लालिमा लिये हुए लाल नेत्रों से पता चल जाता है कि ये सच्चे ईश्वर-भक्त हैं, जिनके नेत्रों से ईश्वर-प्रेम छलकता हुआ दिखाई देता है।

जो जन प्रेमी राम के, तिन की गति है येह।
देह से उद्यम करे, सुमिरन करे विदेह।।

■